1

Sociology

D-II (H) Paper-III

Q.:→ What is Arya Samaj? How far Swami Dayanand succeeded in upliftment of the downraden? Social Construction of Swami Dayanand

Ans: भारत के 19वीं शताब्दी का इतिहास भारतीय संस्कृति के पुनरोद्धार एवं राष्ट्रीय भावना को जागृत करने का इतिहास रहा है। इस शताब्दी में अनेक विचारक एवं समाज सुधारकों ने जन्म लिया। जिन्होने अपने विचारों से भारतीय मानस की सोई आत्मा को जाग्रत किया एवं अपने क्रांतिकारी अभियानों से भारत की जनता के हृदय में समाज के उत्थान के लिए क्रांति की चिनगारी पैदा की। ऐसे विचारकों में स्वामी दयानन्द सरस्वती भी एक है। जिन्होने भारतीय समाज में व्याप्त धार्मिक और सामाजिक अंधविश्वासों को दूर करने में एक मसीहा की भूमिका निभायी। स्वामी जी का ऐसा मानना था कि हिन्दु समाज की सभी मूल समस्याओं के जड़ में स्मृतियों पर आधारित "सनातन" धर्म है। जिसके कारण हिन्दु धर्म अपने वैदिक आदर्शों से हटकर मूर्ति पूजा, सामाजिक कुप्रथाओं एवं वाह्य आडंबरों में उलझ गया। उन्होने अपने क्रान्तिकारी विचारों के द्वारा न केवल हिन्दु समाज के सामाजिक एवं धार्मिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया बल्कि वैदिक प्रमाणों के आधार पर मूर्ति पूजा का भी खण्डन किया।

स्वामी दयानन्द हिन्दु संस्कृति के प्रथम समर्थक थे। एवं उसमें गतिशीलता लाने एवं हिन्दु समाज को संगठित करने के उद्देश्य से आर्य समाज रूपी सुधारवादी संस्था की स्थापना की। इस संस्था के द्वारा उन्होने एक ओर हिन्दुओं को इसलाम धर्म ग्रहण करने से रोका एवं दूसरी तरफ और शुद्धिकरण की प्रकिया द्वारा उन सभी को पुन: हिन्दु बनाने का अवसर प्रदान किया जिन्हें उनकी इच्छा के विरुद्ध मुसलमान अथवा ईसाई बना दिया गया था। आर्य समाज रूपी संस्था द्वारा स्वामी दयानन्द भारतीयों को यह बतलाना चाहते थे कि वास्तविक ज्ञान वेदों में है न कि अन्य जातियों की संस्कृति एवं सभ्यता में। अंग्रेजी सभ्यता एवं संस्कृति के बढ़ते प्रभाव एवं हिन्दु संस्कृति के पतन से वे इतने क्षुब्ध एवं दुःखी थे कि स्वामी जी के हिन्दु संस्कृति के Revival की भावना के संबंध में राष्ट्रकवि दिनकर ने अपनी पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय में लिखा है :- केशवचन्द्र और रानाडे की तुलना में दयानंद वैसे ही दीखते हैं जैसे गोखले की तुलना में तिलक का। जैसे राजनीति के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीयता का सामाजिक तेज पहले पहल तिलक में प्रत्यक्ष हुआ। वैसे ही संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानंद जी में निखरा ~~ब्रह्म समाज~~ और प्रार्थना समाज अपने धर्म और

समाज में सुधार तो कर रहे थे। किन्तु उन्हें बराबर खेद खल रहा था कि हम जो कुछ भी कर रहे हैं वह विदेश की नकल है। आत्म हीनता के भाव से अवगत रहने के कारण वे दर्द से नहीं बोल सके। यह दर्द स्वामी में चमका जरूरत नहीं है। अत: स्वामी जी राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने तथा हिन्दुओं में फिर से प्राण देने में इसलिए सफल हुए कि उन्होंने राष्ट्रीय भावना को जाग्रत कर दिया था एवं इसके लिए अतीत से जो वस्तु ली थी वह था वेद।

स्वामी जी को स्वतंत्रता के प्रति तीव्र अनुराग था और उनका संपूर्ण व्यक्तित्व उसके लिए तड़पा करता था। स्वतंत्रता के हेतु ही उन्होंने विवाहित जीवन का भार उठाने से इन्कार कर सन्यास ले लिया था। वे भारत को आर्यावर्त कहा करते थे एवं यहाँ अखण्ड, स्वतंत्र, स्थानीय तथा निर्भय शासन के अभाव को देखकर दुःखी हुआ करते थे। उन्हें प्रार्थना समाज और ब्रह्म समाज देश भक्ति पर खेद था। उनके विचार एवं उद्देश्य सही होने के कारण ही आर्य समाज की शुद्धि पद्धति ने देश में नवचेतना उत्पन्न की उन्होंने भारतीयों आत्मबल एवं अपनी संस्कृति पर गर्व करने की शिक्षा दी तथा विदेशियों से टक्कर लेने के लिए समर्थ बनाया।

आर्य समाज के योगदान के संबंध में डॉ॰ आर॰ देशाई ने लिखा है:- "आर्य समाज की मूल भावना राष्ट्रीयता एवं जनतांत्रिक थी। यह समाज के अन्दर समानता की भावना की स्थापना की। और ऊँच-नीच जाति, प्रजाति आदि की भावना को सदैव के लिए अन्त करना चाहते थे।"

Dr. D. S. Sharma A Hinduism through the

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में ऐसा कहा जा सकता है कि स्वामी जी भारत के राजनीतिक, धार्मिक एवं सामाजिक दर्शन के एक अग्रणीय नेता थे। जिन्होंने संपूर्ण भारतीय समाज को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया। एवं उन्हें कर्मयोगी होने की शिक्षा दी। महात्मा अरविंद ने उन्हें महानतम व्यक्ति कहा है। the life devine में लिखा है "वह एक ऐसे व्यक्ति के जिन्होंने अनिश्चित वस्तुस्थिति के साथ अपना औपचारिक रूप से विलय नहीं कर दिया था। बल्कि मनुष्यता ~~अविस्क~~ वस्तुओं के ऊपर अपने व्यक्तित्व के एक अमिट छाप लगा दी थी। स्वामी विवेकानंद ने भी दयानंद के विचारों से सहमति प्रकट करते हुए कहा है कि देश के व्यक्तियों की आत्मशक्ति तब तक शक्तिशाली नहीं होगी तब तक देश का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक पुनर्निर्माण नहीं हो सकता।

उन्होने भारतवासियों को कहा कि तुम्हारा धर्म पौराणिक संस्कारों की धूल में छिप गया है। इन संस्कारों के गन्दे पत्ते को तोड़ फेंको। तुम्हारा सच्चा धर्म वैदिक धर्म है, जिस पर आरूढ़ होने से तुम फिर से विश्व विजयी हो सकते हो।

स्वामी जी के विचार सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि उन्होने अपने विचारों से भारतीयों को उस समय संगठित किया जब संपूर्ण हिन्दु संस्कृति एवं वैदिक ज्ञान पतन के युग में पूर्णतः प्रवेश कर चुका था। अंग्रेज भारतीय संस्कृती के नष्ट करने में लग गये थे ऐसे समय में स्वामीजी ने वैदिक धर्म को जीवित कर वेदों के ज्ञान के प्रति लोगों को सजग किया।

स्वामी जी की सबसे बड़ी देन 'आर्य समाज' है जिसकी स्थापना-10 अप्रेल 1875 को बम्बई के चिरगगांव में डा० मा------चन्द्र? की ------ में नियमानुसार हुई एवं शुरु के दिन उसके 28 सदस्य बने इस संस्था के द्वारा उन्होने निम्नवर्गीय भारतीय समाज को ऊँचा उठाने का ही प्रयास नहीं किया बल्कि देश की राजनीतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना में भी महान योगदान दिया। प्रारंभ इसके 28 नियम बनाए गये लेकिन वर्तमान में 10 (दस) नियम प्रचलित हैं। जिसको निम्न आधार पर आर्य समाज को समझने के लिए स्पष्ट किया जा सकता है:-

(1) आर्य समाज के सिद्धांत के अनुसार वृहद ज्ञान से अन्य ज्ञानों की प्राप्ती संभव है।

(2) परमात्मा एक है जो सचिदानंद स्वरुप, सर्वशक्तिमान, निराकार, दयालु न्यायकारी, सर्वव्यापक, अमर, अजन्मा, अनन्त, सर्वाधार, पवित्र और सृष्टिकर्ता है एवं वह उपासना करने योग्य है।

(3) वेद सत सत्य विद्याओ की पुस्तक है जिसे पढ़ना, पढ़ाना एवं सुनना, सुनाना सभी आर्यो का कर्तव्य है।

(4) सत्य को ग्रहण करने एवं असत्य को छोड़ने में हमेशा तत्पर रहना चाहिए।

(5) सभी कार्य धर्म के अनुसार अर्थात सत्य और असत्य का विचार कर करना चाहिए

(6) संसार का उपकार करना चाहिए अर्थात आर्य समाज का उद्देश्य शारीरिक आर्थिक और सामाजिक उन्नति करना है।

(7) सभी से प्रेमपूर्वक धर्मानुसार यथा योग्य व्यवहार करना चाहिए।

(8) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

(9) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट नहीं होनी चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

(10) सभी प्राणियों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतंत्र रहना चाहिए।

A

और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें।
स्पष्ट है कि आर्य समाज कर्म सिद्धांत एवं पुनर्जन्म में विश्वास करता है एवं उसका धर्म वैदिक धर्म है। आर्य समाज की ओर से शिक्षा प्रसार के लिए लाहौर में एक दयानंद ऐंग्लो वैदिक कॉलेज (1886 एवं गुरुकुल कांगड़ी 1902 की स्थापना हुई। लाला लाजपत राय के नेतृत्व में अछूतोद्धार का काम देश में आगे बढ़ाया गया। क्योंकि उनके अनुसार अछूतोपन हिन्दू समाज में एक काला धब्बा है।

सच तो यह है कि स्वामीजी ने भारतीय समाज को संगठित करने एवं उनमें व्यस्त रूढ़िवादिता को दूर कर राष्ट्रीय चेतना लाने के लिए हर पहलू पर अपना विचार दिया। जिसका प्रचार आर्य समाज द्वारा किया गया। उनके विभिन्न विचारों को निम्न आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है।

स्वामी जी एक महान सामाजिक एवं धार्मिक सुधारक थे जिन्होंने भारतीय समाज में जिन्होंने नवीन धारा का संचार किया। जिसके परिणाम तथा प्रभाव बहुत दूरगामी हुए। वह उस राष्ट्रवादी परंपरा के जनक थे। जिसका चरमोत्कर्ष हम लोकमान्य तिलक, विपिन चन्द्र पाल, श्री अरविन्द एवं लाला लाजपत राय सभी व्यक्तियों के चिन्तन में देखते हैं। अपनी महान कृति "सत्यार्थ प्रकाश" में भारतीय संस्कृति के विवेचना कर उन्होंने

(6) भारतीयों को अपने आदर्श, वीरता, निर्भिकता, तथा आत्म सम्मान का संदेश दिया। लेकिन उसका यह मत लव कतई नहीं कि स्वामी जी मात्र एक हिन्दु सामाजिक तथा धार्मिक सुधारक थे बल्कि वे एक विश्व गुरु थे उनका लक्ष्य संपूर्ण मानव जाति का उत्थान था। एवं सही कारण उन्होंने मुसलमानों एवं ईसाईयों से अपने धर्म को परिस्कृत Refinement करने का अनुरोध किया।

स्वामी दयानंद वर्णाश्रम धर्म में विश्वास करते थे लेकिन जाति प्रथा का आधार जन्म न मानकर कर्म मानते थे। उनके अनुसार जिस व्यक्ति का जैसा कर्म हो उसकी जातियता भी उसी आधार पर निश्चित होनी चाहिए। स्वामी जी समाज में जाति भेदभाव के कट्टर विरोधी थे। स्वामीजी आश्रम व्यवस्था को जीवन में मोक्ष प्राप्ती का एक सही कदम मानते थे। एवं मनके ऐसे विचार से पूर्णतया प्रभावित थे उनके अनुसार व्यक्तियों को ब्रह्मचर्य आश्रम में तीनों वेदों का अध्ययन करना चाहिए तथा उसके बाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहिए स्वामी जी व्यक्ति के जीवन में

Scanned with CamScanner

विवाह को आवश्यक मानते थे एवं विवाह जाति के अन्तर्गत न होकर वर्ण के आधार पर होना चाहिए। इससे स्पष्ट होता है कि अन्तर्जातिय विवाह के प्रबल समर्थक थे लेकिन वे बाल विवाह एवं विधवा विवाह के कट्टर विरोधी थे। वे चाहते थे कि भारतीय समाज में ऐसी परंपराओं की समाप्ती हो। स्वामी दयानंद के अनुसार प्रत्येक व्यक्तियों को शिक्षा प्राप्त करना जरूरी है क्योंकि यही एक ऐसा अस्त्र है, जिससे भारतीय समाज की रूढ़ियों मिथ्याचारों, एवं सामाजिक असमानताओं को दूर किया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में स्वामी जी के योगदान को स्पष्ट करते हुए महान भारतीय समाजशास्त्री प्रो० ए० आर० देसाई ने लिखा है कि आर्य समाज ने जाति, वंश, समुदाय, प्रजाति और लिंग भेद को अस्वीकार करते हुए समानता के सिद्धांत के आधार पर शिक्षा का प्रचार प्रसार किया। उन्होंने शिक्षा के बारे में यह भी स्पष्ट किया है कि अंग्रेजों द्वारा निर्धारित शिक्षा भारतीय आवश्यकताओं एवं संस्कृति के अनुकूल नहीं थी। उनके विचार को ध्यान में रखकर आर्य समाज के द्वारा दयानंद एंग्लो वैदिक शिक्षा समिति की स्थापना की। जिसने जनतांत्रिक मूल्यों, नैतिक सिद्धांतों, राष्ट्रवाद आत्मनिर्भरता तथा सत्य पर आधारित शिक्षा की व्यवस्था की स्वामी जी एक शिक्षा के भी प्रबल समर्थक थे क्योंकि वे शिक्षा के बिना स्त्रीयों की दयनीय स्थिति को काफी नजदीक से देखा था। यही कारण है कि उन्होंने स्त्रीयों को पुरुषों के समान अधिकार मिलने पर जोर दिया उनका विचार था कि वैदिक आदर्शों के आधार पर समाज में स्त्रीयों को वे सभी अधिकार प्राप्त हो, जो पुरुषों को है। उन्होंने स्वयं मेरठ में एक बालिका विद्यालय के रूप में हो। स्वामी जी का विश्वास था कि अज्ञानता के कारण ही भारतीय स्त्री समाज बाल विवाह, विधवा प्रथा मूर्ति पूजा विधवा पुनर्विवाह, सती प्रथा बेमेल विवाह बहुपत्नी विवाह इत्यादि का शिकार रही। यही कारण है कि अनेक विद्वान ऐसा स्वीकार करते हैं कि स्वामी दयानंद वर्ती शताब्दी में स्त्रीयों को गौरवपूर्ण पद पर स्थापित करने के लिए एक मसीहा के रूप में आए थे।

स्वामी जी छुआछूत के भी कट्टर विरोधी थे। उनके अनुसार जाति व्यवस्था या वर्ण व्यवस्था का आधार जन्म नहीं कर्म है। अत: कर्म से कभी भी कोई व्यक्ति शूद्र हो सकता है वेद में भी छुआछूत का कोई स्थान नहीं दिया गया है उनका विचार है कि वेद सभी प्राणियों के लिए है क्योंकि ईश्वरत्व है। जो व्यक्ति शूद्रों को वेद पढ़ने की अनुमति नहीं देते वे नास्तिक है वे परंपरागत ब्राह्मणवाद के भी आलोचक थे। उनके अनुसार ब्राह्मण वही है जो धार्मिक विद्वान एवं परोपकारी है।

Scanned with CamScanner

ऐसे ही ब्राह्मणों ने देश की संस्कृति धर्म की रक्षा की एवं अंधविश्वास को दूर करने के लिए इसका विस्तार और प्रसार किया यही कारण है कि स्वामीजी अपनी आर्य समाज संस्था में व्यक्ति की शुद्धिकरण पर जोर दिया। जिसके अन्तर्गत ऐसे व्यक्ति को पुनः हिन्दुओं में सम्मिलित कर लिया जाता था, जिन्हें मुसलमान एवं ईसाई बना दिया जाता था। R.C. Majumdar ने शुद्धिकरण के महत्व के बारे में British parliamentry and Indian Renaissance भाग-2 पेज 111 में लिखा है The most characteristic feature of the Arya samaj is the emphasis at level upon the work of suddhi this means their conversions of those Hindus millions in number who had once been willingly are forcibly converted in to other religions like slaam are character charistianity but we are new willing to come back to the fold of Hinduism.

स्वामी जी एक सच्चे राष्ट्रवादी थे। उनके महानग्रंथ, सत्यार्थ प्रकाश एवं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका एक अध्ययन ऐसा है जिसमें राजनीतिक विचारों को स्पष्ट किया गया है। उन्होने ब्रिटिश शासन के नीति एवं भारतीय संदर्भ में ईसाई धर्म के प्रचार की कटु आलोचना की। वे एक ऐसे कर्मवादी थे। जिन्होंने भारतीयों में राष्ट्रवादी चेतना लाने के लिए भारतीय समाज में व्याप्त पारस्परिक फूट, धार्मिक भेद जीवन में शुद्धता का अभाव, शिक्षा की कमी, स्त्री पुरुष को अपना जीवन साथी के चुनने से वंचित होना इत्यादि बुराइयों को दूर करने का प्रयास किया अतः ऐसा कहा जा सकता है कि जिस प्रकार Rousseau तथा Marx ने क्रमशः फ्रान्सीसी तथा रूसी क्रांतियों के लिए दार्शनिक पृष्ठभूमि तैयार की थी उसी प्रकार दयानंद शिक्षा में वैदिक आर्यों के आदर्शों की विजय चाहते थे।

स्वामी जी ने वैदिक आदर्श एवं प्रेरणा दी। वे जानते थे कि संकटकाल में धर्म ने ही भारत की रक्षा की है। भारत पर अनेक विदेशियों ने आक्रमण कर इसकी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया। लेकिन ऐसे समय में यहाँ के धार्मिक एवं दार्शनिकों ने देश की संस्कृति की रक्षा की। अतः यह कहना अनुचित न होगा। कि जड़ता के गर्त में डूबे हिन्दु समाज में एक नवीन जीवन फूंक देने का जितना श्रेय स्वामी जी का है उतना उस शताब्दी के किसी भी अन्य भारतीय को नहीं। उन्होने अपनी आर्य समाज रूपी संस्था के माध्यम से यह प्रचार किया कि भारतीयों को पथ-प्रदर्शन के लिए पश्चिमी समाज की ओर देखने को

S.N. Choudhary
1
W.N.M.U.